Vol 5 Issue 9 June 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue -9 | June - 2016

Review Of Research

टेलीविजन प्रबंधन : प्रसारण की विश्वसनीयता पर सवाल

राहुल यादव
स्लेट, नेट–जे.आर.एफ. (बिजनेस मैनेजमेंट) , चौमूँ, जयपुर (राज.).

प्रस्तावना –

वर्तमान समय में टेलीविजन की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज वर्तमान विश्व परिदृश्य में टेलीविजन आम व्यक्ति की आवश्यकता बन चुका है, जिसके बगैर सूचना संसार के दृश्य माध्यम से जुड़े रहना संभव नहीं है। जहां तक समाचार चैनलों व उनके प्रबंधन का प्रश्न है, दूरदर्शन को छोड़कर अधिकांश प्राइवेट चैनल है। एक दशक पूर्व तक भारत में समाचारों का प्रमुख स्रोत्र दूरदर्शन ही था, परन्तु निजी चैनलों ने वर्ष 2000 में आगमन के बाद इस वर्चस्व को तोड़ा। सन् 2000 में निजी चैनल आजतक की शुरूआत के बाद पूरा परिदृश्य ही बदल गया। हालांकि आजतक से पहले स्टार एवं जी न्यूज मौजूद थे, परन्तु आजतक के 'सबसे आगे, सबसे तेज' की दौड़ ने प्रतिर्स्पद्धा के नए युग का आगाज किया। इसके बाद सन् 2005 तक एनडीटीवी, सहारा समय, इंडिया टीवी एवं कई अन्य चैनल भी समाचारों के बाजार में उतर चुके थे। इन चैनलों के बीच सबसे पहले और सबसे तेज की दौड़ का असर इनकी विश्वसनीयता और प्रबंधन की साख पर सबसे ज्यादा पड़ा। ऐसे टीवी समाचारों की विश्वसनीयता व प्रबंधन में गिरावट वैश्विक स्तर पर देखी जा रही है।

अमेरिका में प्यू रिसर्च सेंटर द्वारा कराए गए एक सर्वेक्षण में यह बात स्पष्ट होती है कि हाल के दिनों में अमेरिकी समाचार चैनलों की विश्वसनीयता तेजी से घटी है। इस सर्वेक्षण में अमेरिका के 13 बड़े समाचार संगठनों को शामिल किया गया है। अध्ययन में यह बात सामने आई कि जहां प्रथम विश्व युद्ध के बाद लोग मीडिया माध्यमों पर सबसे ज्यादा भरोसा करते थे व उनके साथ समय व्यतीत करते थे, वहीं आज इनके द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों पर भरोसा कम कर रहे हैं। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् जब बुलेट थ्योरी का वर्णन हम पढ़ते है, तो उस समय में लोग मीडिया माध्यमों पर शत प्रतिशत भरोसा करते थे। उनका मानना था कि मीडिया का प्रबंधन बहुत ही मजबूत है और वे उन्हें सही समय पर सही सूचनाएँ पहुँचाकर दुनिया में होने वाली घटनाओं से अवगत कराते थे, ताकि उन्हें विश्व परिदृश्य की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकें। लेकिन आज इनकी विश्वसनीयता का औसत 2010 में 62 फीसदी था वहीं 2011 में वह 56 फीसदी हो गया अर्थात मात्र एक वर्ष में विश्वसनीयता में 6 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई अगर पुराने आंकड़ों पर गौर करें तो एक दशक पहले विश्वसनीयता का यह स्तर 71 फीसदी था। अगर अमेरिकी परिदृश्य से भारतीय परिदृश्य की तुलना करें तो यह गिरावट भारतीय मीडिया परिदृश्य का भी विवरण प्रस्तुत करती है। यहां ऐसा भी सुनने में आता है कि भारतीय दर्शकों के मन में यह बात घर करने लगी है कि इलेक्ट्रानिक मीडिया खासतौर से हिंदी न्यूज चैनल समाचार के प्रस्तुतिकरण एवं प्रबंधन के मामले में भरोसेमंद साबित नहीं हो रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण बड़े–बड़े मीडिया घरानों पर ऐसे लोगों का हाथ है या उनका प्रबंधन ऐसे लोगों के हाथों में हैं जिनका ना तो समाचारों से कोई लेना–देना है और ना ही संचार के क्षेत्र में उनकी कोई विशेष रूचि है। इस माध्यम के द्वारा वे देश की राजनीति से जुड़कर अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति करना चाहते हैं। मुख्यतया उन्होंने दो कारणों से चैनल निकाले हैं, एक तो शुद्ध लाभ कमाने के लिए और दूसरा अपना दबाव बनाने के लिए। जिनका वे अपने आर्थिक उपक्रमों व बिजनेस उपक्रमों को बढ़ावा देने में उपयोग कर सकते हैं।

इसके पश्चात् जब हम भारत और पाश्चात्य देशों की प्रेस में अंतर देखेंगे तो पता चलेगा कि विदेशों में मीडिया एक व्यवसाय है परन्तु वो प्रेस को गर्वन (चलाना) नहीं करते हैं। जबकि वहीं हमारे यहां जो मीडिया उद्योग है वे प्रेस को गर्वन भी कर रहा है। वर्ष 1900 में

विभिन्न चैनलों को ऐसे लोग लेकर आये, जो उद्योगपती, बड़े व्यवसायी एवं बिल्डर्स किस्म के लोग थे तो इस तरह की बाते सामने आयी। यहां कहने से तात्पर्य यह है कि जब तक हम खास तरह के लोगों का प्रोफेशनलिज्म इस सेक्टर में नहीं लायेंगे और यह नहीं दिखायेंगे कि संचार क्षेत्र को चलाने वाला व्यक्ति खुद संचार क्षेत्र का आदमी है और उसके चैनल को चलाने और बिजनेस को बढ़ाने में अपना कोई निजी स्वार्थ नहीं है तो इस तरह की बाते सामने नहीं आयेगी, परन्तु तब तक इस सेक्टर की विश्वसनीयता इस तरह के प्रबंधन के हाथों में झूलती रहेगी अर्थात यहां भी टीवी समाचार अपनी विश्वसनीयता तेजी से खोते जा रहे हैं।

यह सामान्य धारणा है कि दृश्य प्रस्तुति एवं विजुअल सपोर्ट के कारण टीवी समाचार बहुत ही प्रभावी एवं विश्वसनीय होते है, क्योंकि बोले गए शब्द के समर्थन में विजुअल सपोर्ट होने के बाद भी वे कौन से कारण है, जो समाचारों की विश्वसनीयता को प्रभावित कर रहे हैं। अमेरिका में जहां सितंबर 2001, के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमले एवं मार्च 2003 में इराक युद्ध के वक्त टीवी समाचार अपने विश्वसनीयता के सर्वश्रेष्ठ दौर में थे, वहीं वर्तमान में इनकी विश्वसनीयता स्तर में गिरावट के पीछे कौन–कौन से प्रमुख कारक है? यह प्रश्न अमेरिकी मीडिया के परिदृश्य में एक गंभीर प्रश्न बनकर उभरा है। इस मामले पर सीएनएन के वरिष्ठ पत्रकार पीटर अर्नेस्ट का कहना है कि ज्यादातर देशों में समाचार–पत्र, टेलीविजन और मैग्जीन बड़े पाठक समूह के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा अर्जित करने में लगे हुए है। यह लोगों को ज्यादा से ज्यादा आपराधिक समाचारों की खुराक, सेलेब्रिटी गॉसिप और सॉफ्ट फीचर पेश करने में लगे हुए है, जबकि गंभीर विषयों को तवज्जों नही दे रहे है, क्योंकि समाचार प्रबंधको को लगता है कि गंभीर विषय पाठकों का ध्यान अपनी ओर उतना आकृष्ट नहीं कर पायेंगे।

इस मसले पर डॉ. प्रदीप माथुर, पूर्व डायरेक्टर भारतीय जनसंचार संस्थान, का कहना है कि टीवी पर जो लोग आ रहे है वो खास तरह का उद्देश्य पूरा कर रहे हैं। तमाम उस तरह के लोग जो उन पॉलिसी मेटर से अनभिज्ञ है। परंतु जब दो विभिन्न पार्टियों के लोग आपस में टकराते हैं तो उनके आपस में अलग–अलग तरह के विचार हो जाते हैं, तो यह अच्छी बात बनती है कि इस तरह के प्रबंधन से अच्छी चीजें निकलकर सामने आती है, जो अपनी विचारधारा के अनुसार अलग–अलग मत प्रकट कर देती है।

प्रारंभिक अध्ययनों में समाचार–पत्र और फिर उसके बाद रेडियों क्रमशः सबसे विश्वसनीय माध्यम बनकर उभरे। परंतु 1950 के बाद टेलीविजन ने सबसे भरोसेमंद माध्यम का स्थान प्राप्त किया। (पोर्नपिटकपैन, 2004), न्यू हेगन एंड नॉस (1987) के अनुसार टीवी समाचारों को अखबारों की अपेक्षा कम गंभीर प्रकृति का माना गया है, क्योंकि यह माध्यम प्राथमिक तौर पर समाचारों से नहीं जुड़ा रहा है। विश्वसनीयता अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि टीवी की विश्वसनीयता प्रारंभ में उस व्यक्ति या व्यक्तियों पर निर्भर रही है जो कि न्यूज एंकर होते थे।

अगर भारतीय परिदृश्य पर भी हम गौर करें तो एक व्यक्ति किसी खास चैनल को इस कारण से देखता है कि उस पर अमुक एंकर समाचार प्रस्तुत करता है या फिर उसमें कोई खास रिपोर्टर काम करता है। इस मसले को लेकर कुछ मीडिया छात्रों से बात की गई कि अमुक चैनल तो नया है परंतु आप उसको देखना क्यों पसंद करते है? छात्रों ने तुरंत जवाब दिया कि दीपक चौरसिया के कारण। वहीं विभिन्न मीडिया शोधों से प्राप्त तथ्यों व आंकड़ों के आधार पर, आज के दौर में एंकर–विशेष के आधार पर विश्वसनीयता को मापना बेवकूफी ही होगी। क्योंकि एंकर, विभिन्न बैनर विशेष के अन्तर्गत कार्य करते हुए, और उनके हितों को ध्यान में रखते हुए ही कार्य करते है, जिससे हमें निष्पक्ष समाचार प्राप्ति की उम्मीद रखना बेमानी हो जाती है। क्योंकि संस्था में कार्य करते हुए, संस्थागत नीतियों व उद्देश्यों को अनदेखा करते हुए कार्य करना असम्भव सा प्रतीत होता है। यहां यह सवाल प्रमुख रूप से इसलिये भी उठता है कि मीडिया शुद्ध उद्योग न होकर सामाजिक जिम्मेदारी वाला माध्यम है, तो प्रबंधन के बढ़ते दबाव पर भी सवाल उठाना लाजमी है। इन मीडिया माध्यमों की, यह सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी भी बनती है कि वे सही समय पर सही सूचना निष्पक्ष रूप से जनता को प्रेषित करें, ना कि प्रबंधन के दबाव में हावी होकर, पक्षपात की पत्रकारिता करें।

जबकि विभिन्न मीडिया प्रबंधन शोध से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर हम यह कह सकते है कि आज केवल मात्र चैनल की साख व एंकर के नाम की विश्वसनीयता के आधार पर जनता सूचना को ग्रहण नहीं कर रही है, क्योंकि भिन्न–भिन्न मुद्दों पर भिन्न–भिन्न एंकरों व चैनलों के द्वारा जो समाचार या रिपोर्ट जनता को प्रेषित की जा रही है, उनके आधार पर विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा होना वाजीब है।

उसी तरह से तरह से अगर प्रारंभिक दौर के दूरदर्शन समाचारों को देखे, तो उनकी लोकप्रियता एवं विश्वसनीयता का एक प्रमुख कारक दूरदर्शन के प्रस्तोता होते थे। वहीं जब गर्वनमेंट पब्लिक बोर्डकास्टर्स में जब हम दूरदर्शन, राज्यसभा व लोकसभा चैनलों की बात करते हैं तो यह बात निकलकर सामने आती है कि सरकार विशेष के प्रभाव के कारण सूचनाओं को तोड़–मरोड़कर पेश किया जा रहा है, परन्तु इतना सत्तापक्ष के दबाव के चलते हुए भी आज आम जनमानस, इन चैनलों को प्राथमिकता से देखना पसंद करता है। क्योंकि ये जो समाचार प्रसारित करते हैं, वो घटना विशेष की सम्पूर्ण जानकारी कम शब्दों में बेहतर ढ़ंग से लोगों के सामने पेश करते हैं। इसी के चलते जो लोग सिर्फ समाचार देखना चाहते हैं, वे इन्हें प्राथमिकता देते हैं क्योंकि ये माध्यम कम समय में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। वहीं उन दर्शकों का एक मत यह भी है कि कोई घटना या समाचार जो कि अभी हाल ही में घटित हुई है और जो बेहद महत्वपूर्ण है, को जानने के लिए उन्हें मजबूरन प्राइवेट चैनलों की तरफ रूख करना पड़ता है कि आखिर क्या घटित हुआ है? क्योंकि वे घटना को सबसे पहले ब्रेक करते हैं, परन्तु जल्दी जानकारी के लिए उनसे बेहतर विकल्प अभी मौजूद नहीं है। घटना को क्रॉसचैक आप बाद में अन्य गवर्नमेन्ट ब्रोर्डकास्टर्स से भी कर सकते हैं। क्योंकि वे एक निश्चित समय पर समाचार प्रसारित करते हैं एवं कोशिश करते हैं कि किसी तरह से प्रबंधन से विचार–विमर्श कर समाचारों की गुणवता को बरकरार रखा जाए?

हालांकि हाल के दिनों में इस सोच में कुछ बदलाव भी देखने को मिल रहा है। ऐसे में सबसे अहम सवाल यह है कि रोज ब रोज गिरती हुई चैनलों की साख को किस प्रकार बचाया जाए? हालांकि कई भारतीय एवं विदेशी समाचार चैनलों ने इस दिशा में प्रयास शुरू भी कर दिया है। अब समाचार या समाचार आधारित कार्यक्रमों के बाद उनके संदर्भ स्रोत्र देने की प्रवृति लगातार बढ़ रही है, तो कई चैनल रिसर्च आधारित कार्यक्रमों के निर्माण पर ज्यादा फोकस कर रहे है ताकि लोग उनकी समाचार सामग्री पर पूर्ण भरोसा कर सकें। 2005 के बाद शुरू हुआ भूतहा ट्रेंड और सन् 2006 से शुरू हुये नाग–नागिन के डांस अब खात्मे की ओर है। अब यह आशा की जा सकती है कि टेलीविजन चैनल एवं उनका प्रबंधन एक बार फिर अपनी गिरती हुई साख को बचाने की ओर कदम उठा रहा है।

संदर्भ सूची :

1.सिंह, देवव्रत (2012) इंडियन टेलीविजन–कंटेंट, इश्यू एंड डिबेट, हर–आनंद पब्लिकेशन प्रा.लि., नई दिल्ली।

2.मेहता, नलिन (2008) इंडिया ऑन टेलीविजन, हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स, इंडिया।

3.मिश्रा, आनंद (1993) टेलीविजन एंड पापुलर कल्चर इन इंडिया, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

4.रिमर, टी एंड वीवर, डी., डिफरेंट क्वैश्चन डिफरेंट ऑन्सर? मीडिया यूज एंड मीडिया क्रेडिब्लिटी, जर्नलिज्म क्वार्टरलि, 64 (1) 1987, 28–36।

वेबसाइट :

http://scholarcommons.usf.edu/cgi/viewcontent.cgi?article+3346&context=etd&seiredir=1&referer=http%3A%2F%2Fwww.google.co.in

http://record-eagle.com/opinion/x798265872/Another-View-Declinenews-credibility-ratings

http://www.cybercollege.com/tvnews.htm

http://www.poynter.org/latest-news/mediawire/185390/study-newspapers-had-steep-drop-in-credibility-in-last-decade/

http://com.miami.edu/car/miamibeach1.htm

http://www2.le.ac.uk/research/festival/meet/socialscience/elareshi/research

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org